CSIR-NEERI launches bamboo handicraft training programme for women SHGs

CSIR-National Environmental Engineering Research Institute (CSIR-NEERI), Nagpur, has launched a five-day training programme (16–20 June 2026) on bamboo handicrafts for women Self-Help Groups (SHGs) under the theme "Empowering Women Self-Help Groups through Bamboo Handicrafts from Bamboo Grown on Fly Ash Dumps." The initiative aims to promote sustainable livelihoods, women empowerment, and environmental restoration through CSIR-NEERI's bamboo-based Eco-Rejuvenation Technology (ERT).

The programme was inaugurated by Shri Sudip Rane, Chief Engineer, Koradi Thermal Power Station (KTPS), Koradi, and presided over by Dr. S. Venkata Mohan, Director, CSIR-NEERI. Dr. Mahendra P. Patil, Scientist-G and Chair, Solid and Hazardous Waste Management Division, and Shri Pravin Bute, Deputy Executive Engineer, KTPS, were also present.

Addressing the participants, Shri Rane appreciated CSIR-NEERI's efforts in promoting bamboo-based livelihood generation and encouraged women to develop entrepreneurial skills in the growing bamboo sector. Dr. Mohan highlighted bamboo's potential as a renewable resource for environmental restoration, circular economy, climate resilience, and socio-economic development. Dr. Patil emphasized the role of bamboo in restoring degraded lands while creating livelihood opportunities, particularly for women. Shri Bute lauded the dedication of SHG members and encouraged them to produce quality handicrafts with market potential.

Dr. Lal Singh, Scientist-E and Programme Organiser, presented an overview of CSIR-NEERI's bamboo-based ERT initiatives and highlighted their contribution to ecological restoration and livelihood generation.

The training programme will provide hands-on skills in bamboo harvesting, treatment and processing, handicraft production, value-added product development, entrepreneurship, branding, marketing, and product design. The initiative demonstrates how reclaimed fly ash dump sites can be transformed into productive landscapes that generate both environmental and socio-economic benefits for local communities.

Inaugural Session:
Shri Sudip Rane, Chief Engineer, Koradi Thermal Power Station (KTPS), Koradi; Dr. S. Venkata Mohan, Director, CSIR-NEERI; Dr. Mahendra P. Patil, Scientist-G and Chair, Solid and Hazardous Waste Management Division; Shri Pravin Bute, Deputy Executive Engineer, KTPS; Dr. Lal Singh, Scientist-E and women members of Self-Help Groups.

Hands-on skills training in handicraft production

सीएसआईआर-नीरी में महिला स्व-सहायता समूहों के लिए बांस हस्तशिल्प प्रशिक्षण कार्यक्रम

सीएसआईआर-राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-नीरी), नागपुर ने 16 से 20 जून 2026 तक महिला स्व-सहायता समूहों (SHGs) के लिए बांस हस्तशिल्प पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। यह कार्यक्रम "फ्लाई ऐश डंप पर उगाए गए बांस से बांस हस्तशिल्प के माध्यम से महिला स्व-सहायता समूहों का सशक्तिकरण" विषय पर आयोजित किया जा रहा है। इस पहल का उद्देश्य सीएसआईआर-नीरी की बांस आधारित इको-रीजुवेनेशन टेक्नोलॉजी (ERT) के माध्यम से सतत आजीविका, महिला सशक्तिकरण तथा पर्यावरणीय पुनर्स्थापन को बढ़ावा देना है।

कार्यक्रम का उद्घाटन कोराडी ताप विद्युत केंद्र (केटीपीएस), कोराडी के मुख्य अभियंता श्री सुदीप राणे द्वारा किया गया तथा इसकी अध्यक्षता सीएसआईआर-नीरी के निदेशक डॉ. एस. वेंकट मोहन ने की। इस अवसर पर डॉ. महेंद्र पी. पाटिल, वैज्ञानिक-जी एवं अध्यक्ष, ठोस एवं खतरनाक अपशिष्ट प्रबंधन प्रभाग तथा केटीपीएस, कोराडी के उप कार्यकारी अभियंता श्री प्रवीण बुटे भी उपस्थित थे।

प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए श्री राणे ने बांस आधारित आजीविका संवर्धन में सीएसआईआर-नीरी के प्रयासों की सराहना की तथा महिलाओं को बांस क्षेत्र में उद्यमिता कौशल विकसित करने के लिए प्रेरित किया। डॉ. मोहन ने पर्यावरणीय पुनर्स्थापन, सर्कुलर इकोनॉमी, जलवायु अनुकूलनशीलता तथा सामाजिक-आर्थिक विकास में बांस की एक नवीकरणीय संसाधन के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। डॉ. पाटिल ने क्षतिग्रस्त एवं अनुपयोगी भूमि के पुनर्वास के साथ-साथ विशेषकर महिलाओं के लिए आजीविका के अवसर सृजित करने में बांस की भूमिका को रेखांकित किया। श्री बुटे ने स्व-सहायता समूहों की महिलाओं के समर्पण की सराहना करते हुए उन्हें बाजार की मांग के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण हस्तशिल्प उत्पाद तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम संयोजक एवं वैज्ञानिक-ई, डॉ. लाल सिंह ने सीएसआईआर-नीरी की बांस आधारित इको-रीजुवेनेशन टेक्नोलॉजी (ERT) से संबंधित गतिविधियों की जानकारी दी तथा पर्यावरण संरक्षण और आजीविका सृजन में उनके योगदान पर प्रकाश डाला।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत प्रतिभागियों को बांस की कटाई, उपचार एवं प्रसंस्करण, हस्तशिल्प निर्माण, मूल्य संवर्धित उत्पादों के विकास, उद्यमिता, ब्रांडिंग, विपणन तथा उत्पाद डिज़ाइन से संबंधित व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। यह पहल दर्शाती है कि पुनर्वासित फ्लाई ऐश डंप स्थलों को उत्पादक क्षेत्रों में परिवर्तित कर स्थानीय समुदायों के लिए पर्यावरणीय एवं सामाजिक-आर्थिक लाभ सुनिश्चित किए जा सकते हैं।

सीएसआयआर-नीरीमध्ये महिला बचत गटांसाठी बांबू हस्तकला प्रशिक्षण कार्यक्रम

सीएसआयआर-राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी संशोधन संस्था (सीएसआयआर-नीरी), नागपूर येथे 16 ते 20 जून 2026 या कालावधीत महिला बचत गटांसाठी (SHGs) बांबू हस्तकलेवरील पाच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करण्यात आला आहे. हा कार्यक्रम "फ्लाय ॲश डंपवर उगवलेल्या बांबूपासून हस्तकला निर्मितीद्वारे महिला बचत गटांचे सक्षमीकरण" या विषयावर आयोजित करण्यात येत आहे. या उपक्रमाचा उद्देश सीएसआयआर-नीरीच्या बांबू आधारित इको-रीजुव्हनेशन टेक्नॉलॉजी (ERT) च्या माध्यमातून शाश्वत उपजीविका, महिला सक्षमीकरण आणि पर्यावरणीय पुनर्स्थापनेला प्रोत्साहन देणे हा आहे.

कार्यक्रमाचे उद्घाटन कोराडी औष्णिक विद्युत केंद्र (केटीपीएस), कोराडी येथील मुख्य अभियंता श्री. सुदीप राणे यांच्या हस्ते करण्यात आले, तर कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी सीएसआयआर-नीरीचे संचालक डॉ. एस. वेंकट मोहन होते. यावेळी डॉ. महेंद्र पी. पाटील, वैज्ञानिक-जी तथा अध्यक्ष, घन व घातक कचरा व्यवस्थापन विभाग आणि केटीपीएस, कोराडी येथील उप कार्यकारी अभियंता श्री. प्रवीण बुटे उपस्थित होते.

उपस्थितांना मार्गदर्शन करताना श्री. राणे यांनी बांबू आधारित उपजीविका निर्मितीसाठी सीएसआयआर-नीरीच्या प्रयत्नांचे कौतुक केले तसेच महिलांना बांबू क्षेत्रात उद्योजकता कौशल्य विकसित करण्यासाठी प्रोत्साहित केले. डॉ. मोहन यांनी पर्यावरणीय पुनर्स्थापना, सर्क्युलर इकॉनॉमी, हवामान अनुकूलता आणि सामाजिक-आर्थिक विकासासाठी बांबू हे एक महत्त्वाचे नवीकरणीय साधन असल्याचे अधोरेखित केले. डॉ. पाटील यांनी खराब व अनुपयोगी जमिनींच्या पुनर्वसनासोबतच विशेषतः महिलांसाठी उपजीविकेच्या संधी निर्माण करण्यात बांबूची महत्त्वपूर्ण भूमिका स्पष्ट केली. श्री. बुटे यांनी महिला बचत गटांच्या सदस्यांच्या समर्पणाचे कौतुक करत त्यांना बाजारपेठेच्या गरजेनुसार दर्जेदार हस्तकला उत्पादने तयार करण्यासाठी प्रोत्साहित केले.

कार्यक्रम संयोजक तथा वैज्ञानिक-ई डॉ. लाल सिंह यांनी सीएसआयआर-नीरीच्या बांबू आधारित इको-रीजुव्हनेशन टेक्नॉलॉजी (ERT) अंतर्गत राबविण्यात येणाऱ्या विविध उपक्रमांची माहिती दिली तसेच पर्यावरण संवर्धन आणि उपजीविका निर्मितीमधील त्यांच्या योगदानावर प्रकाश टाकला.

या प्रशिक्षण कार्यक्रमांतर्गत सहभागी महिलांना बांबूची कापणी, प्रक्रिया व संवर्धन, हस्तकला निर्मिती, मूल्यवर्धित उत्पादनांचा विकास, उद्योजकता, ब्रँडिंग, विपणन तसेच उत्पादन डिझाइन यांसंबंधी प्रत्यक्ष प्रशिक्षण दिले जाणार आहे. हा उपक्रम पुनर्वसित फ्लाय ॲश डंप क्षेत्रांचे उत्पादक भूभागांमध्ये रूपांतर करून स्थानिक समुदायांना पर्यावरणीय तसेच सामाजिक-आर्थिक लाभ कसे मिळू शकतात, हे दर्शवितो.